भारत सरकार
महिला एवं बाल विकास मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 3221
दिनांक 13 मार्च, 2020 को उत्तर के लिए

महिलाओं और बच्चों में स्वास्थ्य समस्याएं

वैश्विक क्षुधा सूचकांक

3221. श्री रमेश बिन्दः

क्या महिला और बाल विकास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) नवीनतम वैश्विक रिपोर्ट के अनुसार 117 देशों की सूची में वैश्विक क्षुधा सूचकांक में भारत का स्थान क्या है और वर्ष 2018 में 119 देशों में कराए गए अध्ययन के अनुसार वैश्विक क्षुधा सूचकांक में भारत का स्थान क्या है;
(ख) गत तीन वर्षों के दौरान भारत में क्षुध/कुपोषण में कितनी कमी दर्ज की गई है और देश में कितने प्रतिशत लोग दो वक्त के भोजन से वंचित हैं; और
(ग) गत तीन वर्षों के दौरान देश में कुपोषित बच्चों का ब्यौरा क्या है और उक्त अवधि के दौरान कुपोषण के कारण कितने बच्चों की मृत्यु हुई है?

उत्तर

श्रीमती स्मृति ज़ुबिन ईरानी महिला एवं बाल विकास मंत्री

(क) : "वैल्थहंगरहिल्फे" और "कंसर्न वर्ल्डवाइड" द्वारा तैयार वैश्विक क्षुधा सूचकांक रिपोर्ट, 2019 के अनुसार, भारत का स्कोर 30.3 था और यह 117 देशों में 102वें स्थान पर था।

(ख) और (ग) : वैश्विक क्षुधा सूचकांक(जीएचआई) भारत की सही तस्वीर नहीं दर्शाता क्योंकि यह "क्षुधा" का एक त्रुटिपूर्ण पैमाना है। इसे अंकित मान के तौर पर नहीं लिया जाना चाहिए क्योंकि यह न तो उपयुक्त है और न ही किसी देश में व्याप्त क्षुधा का प्रतिनिधित्व करता है। इसके चार घटकों में से केवल एक घटक यानी अल्पपोषण क्षुधा से प्रत्यक्ष तौर पर संबंधित है। ठिगनापन और दुबलापन दोनों सूचक विभिन्न अन्य कारकों जैसे स्वच्छता, अनुवांशिकी, पर्यावरण और भूख के अलावा भोजन आहार के उपयोग के जटिल सम्मिश्रण के परिणाम हैं, जिन्हें जीएचआई में ठिगनेपन और दुबलेपन के लिए प्रेरक/परिणामी कारक माना जाता है। इसके साथ ही इस बात के कम ही प्रमाण हैं कि चौथा सूचक यानी बाल मृत्यु दर भूख का परिणाम है। इसके अलावा, जीएचआई के संकलन में प्रयोग की जाने वाली पद्धति त्रुटिपूर्ण है। सूचक मानों में मानकीकरण के लिए प्रयुक्त तकनीक में बच्चों के दुबलेपन और 5 वर्ष से कम आयु में मृत्यु दर पर अधिक जोर दिया जाता है, जो कि देश की समग्र आबादी में भूख की स्थिति का प्रतिनिधित्व नहीं करती। जीएचआई रिपोर्ट में प्रयुक्त डाटा अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों से लिए जाते हैं, जो देश में उपलब्ध नवीनतम आंकड़ों के अनुसार अद्यतन नहीं किए होते।

इसके अलावा, व्यापक राष्ट्रीय पोषण सर्वेक्षण(सीएनएनएस), 2016-18 (एमओएचएफडब्ल्यू के तत्वावधान में किए गए) ने दर्शाया है कि भारत में जीएचआई में प्रयुक्त दो मानकों में पर्याप्त सुधार किया है। ठिगनेपन की व्यापकता एनएफएचएस-4 के अनुसार 38.4% से घटकर 34.7% और दुबलापन 21.0% से घटकर सीएनएनएस रिपोर्ट के अनुसार 17.3% रह गया है। इसके साथ ही नमूना पंजीकरण प्रणाली(एसआरएस) 2017 के अनुसार 5 वर्ष से कम में मृत्यु दर 3.7% है, जबकि जीएचआई, 2019 के अनुसार यह 3.9% सूचित की गई है। जीएचआई, 2019 की गणना

में इन आंकड़ों पर ध्यान नहीं दिया गया है। यदि ठिगनेपन, दुबलेपन और 5 वर्ष से कम आयु में मृत्यु पर सीएनएनएस/एसआरएस आंकड़ों के आधार पर जीएचआई अंकों की गणना की जाती, तो हमारे देश की स्थिति और बेहतर होती। इस विधि से भारत की स्थिति 102 की अपेक्षा 91 होती।

पोषण सूचकों पर डाटा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा समय-समय पर संचालित राष्ट्रीय सर्वेक्षणों के तहत संग्रहीत किया जाता है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षणों(एनएफएचएस) और व्यापक राष्ट्रीय पोषण सर्वेक्षण के तहत सूचित बच्चों, महिलाओं और पुरुषों की पोषण स्थिति में रूझान निम्न प्रकार हैं :

सूचक	एनएफएचएस-3 2005-06 (%)	एनएफएचएस-4 2015-16 (%)	सीएनएनएस 2016-2018 (%)
5 वर्ष से कम आयु के बच्चे			
दुबलापन	19.8	21	17.3
ठिगनापन	48	38.4	34.7
कुपोषण	42.5	35.7	33.4
वयस्क (15-49 वर्ष)			
अल्पवज़नी महिला (बीएमआई<18.5 कि./मी^{2})	35.5	22.9	-
अल्पवज़नी पुरुष (बीएमआई<18.5 कि./मी^{2})	34.2	20.2	-

कुपोषण 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में मृत्यु का सीधा कारण नहीं है। हालांकि, यह संक्रमणों के प्रति प्रतिरोध घटाकर रूग्णता और मृत्यु दर को बढ़ा सकता है। 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों की सकल मृत्यु दर प्रति हजार जीवित जन्मों पर 74 (एनएफएचएस-3) से घटकर 50(एनएफएचएस-4) रह गई है।

*****